एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जैर का अटकना : कारण, लक्षण और उपचार

(*उमेश कुमार जायसवाल, मोहम्मद ईशान हाशमी एवं अमित कुमार)
लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविध्यालय, हिसार, हरियाणा
संवादी लेखक का ईमेल पता: 20umeshjaiswal@gmail.com

यह रोग दुधारू पशुओं में अधिक देखा जाता है। प्रसव की भ्रूण झिल्ली 5-6 घंटे के बाद बाहर आती है, अगर 8-12 घंटे तक भ्रूण की झिल्ली बाहर नहीं आती है तो इस स्थिति को आरओपी कहते हैं। समय पर ईलाज न होने पर पशु का दुग्ध उत्पादन घट जाता है, गर्भाशय/बच्चेदानी मे संक्रमण हो जाता है व कभी-कभी पशु बांझ भी हो सकता है !

कारण :-

1. गर्भपात होना
2. जब गर्भाशय में एक से अधिक बछड़े मौजूद हों या डिस्टोसिया हो तो आरओपी होता है।
3. पशु आहार में विटामिन ए की कमी।
4. यदि रक्त में कैल्शियम की कमी है।
5. संक्रामक कारक (Brucella abortus,mycobacterium tuberculosis,vibrio fetus ,fungal infections etc,)

लक्षण :-

1. पशु मालिक शिकायत करते हैं कि प्रसव के 2 दिन बाद लेकिन प्लेसेंटा बाहर नहीं हुआ।
2. प्लेसेंटा का कुछ हिस्सा लटकता हुआ दिखाई देता है और अगर यह लंबा है कि प्लेसेंटा बाहर नहीं आया है तब योनि और गर्भाशय से दुर्गंध आती है। यदि आरओपी में संक्रमण होता है जिससे जानवरों में निम्न स्थिति देखी जाती है:-
   a) बढ़ी हुई नाड़ी की दर, श्वसन दर में वृद्धि, तापमान में वृद्धि।, एनोरेक्सिया, कमी
   b) दूध की उपज कमी, अवसाद, दस्त, तनाव और योनि स्राव।
3. यदि प्लेसेंटा 36 घंटे में बाहर नहीं आता है, तो यह 6-10 दिनों में बाहर नहीं आएगा। क्योंकि 36 घंटे के बाद गर्भाशय का संकुचन कम हो जाता है। यदि डिस्टोकिया होता है और प्लेसेंटा लंबे समय तक बनाए रखा जाता है, जो जानवर के लिए खतरनाक हो सकता है।

निदान :- इतिहास और लक्षणों के अनुसार।

आरओपी का प्रकार:-दो प्रकार

1. **वास्तविक आरओपी** :- जब मातृ एवं भ्रूण बीजपत्र एक दूसरे से और भ्रूण से अलग हो जाते हैं गर्भाशय में झिल्ली ढीली पड़ रही है
2. **स्पष्ट आरओपी** :- जब भ्रूण और मातृ बीजपत्र एक दूसरे से अलग नहीं होते हैं और भ्रूण की झिल्ली गर्भाशय की दीवार से जुड़ी होती है।

उपचार :-

1. अजवाइन +गुड़ दे जो रोगी प्राणी की नस्ल पर निर्भर करता है!
2. एकबोलिक्स (गर्भाशय मे संकुचन बढाने वाली औषधि) जैसे- यूटेरोटोन लिक्विड़ , हिमरोप, रिप्लान्टा!
3. सबसे पहले यह पता करें कि योनि में हाथ लगाने से किस प्रकार का आरओपी होता है। अगर यह असली आरओपी टाइप है, तो इसे खींचकर आसानी से निकल जाएगा। अन्यथा यह स्पष्ट रूप से गर्भाशय की दीवार से जुड़ा होगा और खींचकर बाहर नहीं आएगा। स्पष्ट प्रकार का इलाज करने के लिए, ऑक्सीटोसिन 60 आईयू आई/एम या स्टिलबेस्ट्रॉल 4एमएल आई/एम 48 घंटे . के बाद दिया जाता है।
   a. प्लेसेंटा को हाथ से खींचकर मैन्युअल रूप से हटाना।
   b. प्लेसेंटा निकालने के बाद होस्टोसाइक्लिन पाउडर 5 ग्राम 50 - 100 मि.ली. आसुत जल, यदि होस्टासाइक्लिन पाउडर मौजूद नहीं है तो टेरामाइसिन जैसी एंटीबायोटिक गोलियां, स्टेक्लिन, ओबसाइकिल या पाउला बोल्व्स (4-8) दिए जा सकते हैं।
   c. यदि जानवर में तापमान है तो एंटीबायोटिक पॉजिटिव एंटीपायरेटिक दिया जाता है।
   d. ऑक्सीटोसिन को प्लेसेंटा के पूरी तरह बाहर आने तक दोहराया जा सकता है।

दुष्प्रभाव :-

1. दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है |
2. प्रसव के बाद metritis, endometritis, pyometra,आदि बीमारियो के होने कि संभावनाऐ होती है |
3. यूटेरस का इनवोलेसन देरी से होता है |
4. दो ब्यात के बीच की अवधि बढ़ जाती है |